"सतसई-परम्परा में बिहारी सतसई" का स्थान

बी.ए. प्रथम व तृतीय वर्ष हेतु
हिन्दी साहित्य

प्रस्तुतकर्ता
डॉ. जगदीश शरण
सहायक प्रोफ़ेसर हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय भोजपुर
(मुरादाबाद)

स्वयं निर्मित

Scanned with CamScanner

बिहारी : संक्षिप्त परिचय :

जन्म संवत् 1652 (सन् 1595 ईस्वी) में ग्वालियर के बसुआ गोविंदपुर नामक स्थान पर। पिता का नाम केशवराय। जाति के माथुर चौबे। निधन संवत् 1720 (सन् 1663 ईस्वी) में। केवल एक कृति 'सतसई' रचकर हिन्दी काव्य-साहित्य में अमर हो गए। यह कृति जयपुर-नरेश निर्जा राजा जयसिंह के निर्देश पर लिखी गई।

सतसई :

'सतसई' बिहारी की रचना है। यह रीतिकाल और सतसई परम्परा का सर्वाधिक प्रसिद्ध काव्यग्रन्थ है। इसकी पचासों टीकाएँ लिखी जा चुकी हैं। इन टीकाओं में कृष्णकवि की टीका, हरिप्रकाश की टीका, लल्लूलाल की टीका, सरदार कवि की टीका और सूरति मिश्र की टीका तो अत्यधिक प्रसिद्ध हुई हैं। किंतु यह सतसई जयपुर के निर्जा राजा जयसाह (जयसिंह) के निर्देश पर लिखी गई। कहा जाता है कि एक बार बिहारी जब जयपुर पहुँचे तो राजा जयसिंह 30 वर्ष अपनी नई नवेली रानी के प्रेमपाश में इतनी बँधे हुए थे कि वे राज्य-कार्य ही भूल गए थे। सभासदों की प्रार्थना पर बिहारी ने एक दोहा लिखकर किसी प्रकार राजा के पास भिजवाया। दोहा इस प्रकार है -

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अली, कली ही सौं बँध्यौ, आगैं कौन हवाल॥

दोहे का भाव पढ़कर राजा अत्यधिक शर्मिंदा हुआ और राज-कार्य पर ध्यान देने लगा। कहा जाता है कि राजा जयसिंह ने बिहारी को इतनी तरह के और दोहे बनाने की आज्ञा दी। आज्ञानुसार बिहारी ने 700 से अधिक दोहे बनाये जो संगृहीत होकर 'बिहारी सतसई' के नाम से प्रसिद्ध हुए। पुरस्कार-स्वरूप राजा प्रति दोहे पर एक अशर्फी प्रदान करता था।

'बिहारी सतसई' पर प्राकृत की 'गाहा सत्तसई' और संस्कृत के 'आर्या सप्तशती' का प्रभाव मुख्य रूप से दिखाई देता है। 'आर्या सप्तशती' का प्रभाव

Scanned with CamScanner

गीतारूप में माना जाता है। उर्दू में 'गुलदस्ते-ए-बिहारी' के नाम से इसका अनुवाद भी हो चुका है। ग्रियर्सन ने बिहारी को 'भाव का पॉम्पियन' कहा है।

सतसई परम्परा : सतसई परम्परा की शुरुआत संस्कृत की 'आर्या सप्तशती' से मानी जाती है परन्तु कुछ विद्वान इस पर प्राकृत की 'गाहा सतसई' का प्रभाव मानकर इसे सतसई परम्परा का पहला ग्रन्थ मानते हैं।

प्राकृत की सतसई परम्परा : इसमें दो ही प्रमुख सतसई हैं—

(1) गाहा सतसई — रचयिता हाल कवि। समय पाँचवीं शताब्दी। कृति सात भागों में विभक्त। प्रत्येक भाग में 100-100 पदों का समावेश। मुक्तक! 'गाहा' छन्द का प्रयोग।

(2) वज्जा लग्गं — जयवल्लभ द्वारा संकलित। गाहा सतसई की भी 100 गाथाएँ इसमें संकलित। छन्दों की संख्या 795 है।

संस्कृत की सतसई परम्परा : इस परम्परा में गोवर्द्धनाचार्य के द्वारा रचित 'आर्या सप्तशती' प्रमुख रचना है। आर्या नामक छन्द का प्रयोग। इस पर 'गाहा सतसई' का विशेष प्रभाव।

हिन्दी की सतसई परम्परा : हिन्दी की सतसई परम्परा में 'बिहारी सतसई' के अतिरिक्त निम्नलिखित प्रमुख सतसई हैं—

(1) तुलसी सतसई — हिन्दी की सतसई-परम्परा की पहली कृति। कुल 747 दोहे संकलित। सात शतकों में विभाजित। दोहा छन्द का आद्योपान्त प्रयोग।

(2) रहीम सतसई — उपदेश प्रधान सतसई। यह सतसई की परम्परा से इतर है क्योंकि इसमें शृंगार रस का प्राधान्य नहीं है।

Scanned with CamScanner

(3) मतिराम सतसई :– इसमें 713 दोहे संकलित। शृंगार रस की प्रधानता।

(4) ~~रसनिधि~~ बिहारी सतसई – हिन्दी सतसई परम्परा की सर्वश्रेष्ठ कृति है। कुल दोहा संख्या 713 है। दोहा और सोरठा छन्द में रचित।

(5) रसनिधि सतसई – रचयिता पृथ्वीसिंह 'रसनिधि'। विद्वानों ने इसे 'सतसईया' का संक्षिप्त संस्करण माना है। बिहारी सतसई ~~से~~ का प्रभाव। रचनाकाल सम्वत् 1761 है।

(6) वृन्द सतसई – रचयिता महाकवि वृन्द। इसके सूक्तिपरक और नीतिपरक ~~के~~ दोहों से इस सतसई की ख्याति ~~इसके~~ प्रसारित हुई। इसके निम्नलिखित दोहे तो बड़े प्रसिद्ध रहे हैं–

अपनी पहुँच बिचारि कै, करतब करिये दौर।
तेते पाँव पसारिये, जेती लांबी सौर॥

करिये सुख को होत दुख, यह कहो कौन सयान।
वा सोने को जारिये, जासों टूटे कान॥

करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात तें, सिल पर परत निसान॥

कुल सपूत जान्यो परै, लखि सुभ लच्छन गात।
होनहार बिरवान के, होत चीकनै पात॥

(7) राम सतसई – रचयिता रामसहाय दास। रचनाकाल संवत् 1860 से सम्वत् 1880 के मध्य। शृंगार रस की प्रधानता।

(8) विक्रम सतसई – रचयिता राजा विक्रमसिंह बुंदेला। रचनाकाल संवत 1839 से सम्वत 1886 के मध्य। श्रृंगार रस की प्रधानता। सतसई परम्परा की प्रतिष्ठित सतसई।

(9) वीर सतसई – रचनाकाल सन् 1927 ईस्वी। रचयिता वियोगी हरि। श्रृंगार रस की सतसई परम्परा से बिलकुल हटकर वीर रस में रचित सतसई।

(10) किसान सतसई – हिन्दी में सतसई परम्परा की अनूठी कृति। रचयिता अलीगढ़ जनपद निवासि कवि जगनाथसिंह सेंगर। किसानों और उनकी समस्या पर रचित सतसई। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत।

श्रृंगारिकता :- 'सतसई' बिहारी की श्रृंगार-प्रधान रचना है। श्रृंगार के एक पक्ष संयोग श्रृंगार में बिहारी का मन अधिक रमा है। वियोग श्रृंगार की रचनाएँ भी बड़ी सशक्त बन पड़ी हैं, इनमें वियोग की लगभग सभी दशाओं की अभिव्यक्ति की गई है, फिर भी संयोग श्रृंगार के अन्तर्गत बिहारी ने जितनी विविध प्रकार की मुद्राओं, नायिका-भेदादि की योजना की है, उतनी विविधता इनके वियोग श्रृंगार में दृष्टिगोचर नहीं होती।

प्रेमी-प्रेमिका के सौन्दर्य, उनके प्रति एक-दूसरे का आकर्षण, प्रेम, मिलन, हास-परिहास, प्रेम-कटाक्ष, मुद्राएं आदि संभोग (संयोग) श्रृंगार के अन्तर्गत आते हैं। बिहारी ने संयोग की इन सभी दशाओं का अद्भुत चित्रण किया है। नायिका के रूप-चित्रण नख-शिख-वर्णन, हास-परिहास, नायिकाओं के प्रेम-कटाक्ष, प्रेमी-प्रेमिकाओं की प्रणय-क्रीड़ा, रतिक्रीड़ा एवं अभिसार, उनकी अनुभावों का बिहारी ने बड़ा ही सजीव वर्णन किया है। वियोग श्रृंगार के चित्रण में बिहारी ने वियोग के चारों प्रकारों — पूर्वराग, मान, प्रवास, करुण — का विलक्षण चित्रण किया है। वियोग श्रृंगार के अन्तर्गत बिहारी ने प्रवास जन्य-की विरह सर्वाधिक लिखा है।

'बिहारी सतसई' से संयोग और वियोग श्रृंगार के कुछ प्रमुख उदाहरण

Scanned with CamScanner

नीचे दिये जा रहे हैं —

संयोग श्रृंगार :

अंग-अंग-नग जगमगत, दीपशिखा-सी देह।
दिया बढ़ाए हू रहै, बड़ौ उज्यारौ गेह।।

— नखशिख वर्णन

बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाइ।
सौंह करै, भौंहनु हँसै, दैन कहै नटि जाइ।।

— हास-परिहास

मैं मिसहा सोयौ समुझि, मुँह चूम्यौ ढिंग जाइ।
हँस्यौ, खिसानी, गल रह्यौ, रही गरैं लपटाइ।।

— रतिक्रीड़ा एवं आलिंगन

विप्रलंभ/वियोग श्रृंगार :

लाल तुम्हारे विरह की, अगनि अनूप अपार।
सरसै बरसै नीरहूँ, झरहूँ मिटै न झार।।

— विरह की एक दशा – गुणकथन

कहा कहौं बाकी दशा, हरि प्रानन के ईस।
विरह ज्वाला जरिबौ लखै, मरिबौ भयौ असीस।

— मरण दशा

गह्यौ अबोलौ बोलि प्यौ, आपुहिं पठै बसीठि।
दीठि चुराई दुहुन की, लखि सकुचौंहीं दीठि।।

— वियोग का एक प्रकार – प्रवास

काव्यकला : बिहारी ने एक छोटे-से दोहे में हृदय के गम्भीर उद्गार बड़े विस्तार के साथ प्रकट किए हैं। इसलिए बिहारी की इस अनूठी शैली को लक्ष्य करके विद्वानों ने उनके रचना-कार्य को गागर में सागर भरना कहकर अत्यधिक प्रशंसा की है। ग्रियर्सन ने तो उन्हें भारत का पॉम्पसन कहा है। बिहारी की काव्यकला के अन्तर्गत भाव पक्ष और कलापक्ष के सभी तत्त्वों का सजीव वर्णन है। उनके भाव-पक्ष को हम इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं।

(1) गागर में सागर भरने का सफलतम प्रमाण सतसई में दिखाई देता है।

(2) भक्ति एवं नीतिप्रधान रचनाओं के अन्तर्गत बिहारी ने राधा एवं कृष्ण, लक्ष्मी आदि एवं उपासना ~~तत्त्व~~ के दोहों की रचना की है। समाज में व्याप्त बाह्याडम्बरों का बिहारी ने खुलकर विरोध किया।

(3) बिहारी श्रृंगार के अद्वितीय कवि हैं। श्रृंगार के दोनों पक्षों का उन्होंने बड़ा सजीव और सुन्दर वर्णन किया है।

(4) प्रकृति-चित्रण के अनुपम उदाहरण सतसई में प्राप्त हैं। ~~मुख्यतः~~ बिहारी ने मुख्यतः प्रकृति का आलम्बन, उद्दीपन, आलंकारिक और उपदेशात्मक रूप में वर्णन किया है।

(5) नायिका-भेदों में बिहारी ने अनेक प्रकार ~~की~~ नायिकाओं यथा- मुग्धा, प्रौढ़ा, कनिष्ठा, नवोढ़ा, स्वकीया, परकीया, स्वाधीनपतिका, अभिसारिका आदि- का वर्णन किया है।

(6) बिहारी की 'सतसई' में कल्पना की अद्भुत समाहार-शक्ति का रूप विद्यमान है। अनेक दोहे इसके उदाहरण हैं, यथा - 'कहत नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात। भरे भौन में करत हैं, नैननु ही सौं बात' आदि दोहे।

(7) इसके साथ ही सतसई में बिहारी की सूक्ष्म पर्यवेक्षण शक्ति, उक्ति-वैचित्र्य, बहुज्ञता और प्रतिभा-प्रयोग की कला के दर्शन होते हैं।

Scanned with CamScanner

काव्य पक्ष के अन्तर्गत भाषा-शैली, छन्द-विधान, अलंकार आदि की योजना का विवेचन किया जाता है। बिहारी की भाषा साहित्यिक ब्रजभाषा है। इसमें बुन्देलखण्डी, उर्दू, फारसी आदि भाषाओं का प्रयोग भी हुआ है। बिहारी की शैली मुक्तक है। छन्द विधान में उन्होंने दोहा और सोरठा छन्द को अपनाया है। अलंकारों के प्रयोग में बिहारी काफी दक्ष थे। एक ही छोटे-से दोहे में इन्होंने कई-कई अलंकारों का समावेश किया है। सतसई को 'ब्रजभाषा का भूषण' कहा जाता है।